दिनांक :- 13-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- वाणिज्य व्यापार (~~मध्य~~ मौर्योत्तर काल)

इस काल में व्यापार तथा वाणिज्य को प्रोत्साहन देने वाले निम्नांकित कारक थे।

1. नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नये वर्गों का उदय
2. रोम तथा चीन के साथ व्यापारिक संबंधों का विकास
3. रोम के साथ व्यापारिक संबंधों के फलस्वरूप दक्षिण पूर्व एशिया के मसालों के साथ जुड़ाव

Scanned with CamScanner

इस काल में कलाओं तथा शिल्पों का विलक्षण विकास हुआ मौर्य पूर्व काल के बौद्ध ग्रंथ दीर्घनिकाय में 34 प्रकार के शिल्पों की चर्चा है। मौर्योत्तर काल के महायान बौद्ध ग्रंथ मिलिन्दपञ्हन में 75 प्रकार के व्यवसायों की चर्चा है जिनमें 60 विभिन्न प्रकार के शिल्पों से जुड़े थे।

मिलिन्दपञ्हन में उल्लिखित व्यवसायों में से 8 विभिन्न प्रकार के धातु उद्योग से संबंधित थे जैसे सोना, चाँदी, ताँबा टिन, सीसा पीतल लोहा इत्यादि।

इस काल में उद्योग के भारी विकास ने उनमें विशिष्टीकरण को भी प्रोत्साहन दिया।

मौर्योत्तर काल में कारुकर नामक कर कारीगरों से उगाहा जाता था।

मिलिन्दपञ्हन में बताये गये धातु उद्योग से विकसित खनन उद्योग का साक्ष्य मिलता है। लौह उत्पादन में

Scanned with CamScanner

आन्ध्र प्रदेश का तेलांगना क्षेत्र सबसे विकसित प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ के करीमनगर तथा नालगोंडा जिले से भारी मात्रा में लौह सामग्री प्राप्त हुई है। कार्टियस ने भारत में विकसित लौह प्रौद्योगिकी का संदर्भ देते हुए कहा है कि यहाँ श्वेत लौह का उत्पादन होता था। भारतीय लोहा तथा इस्पात विश्व में अद्वितीय था तथा इसका निर्यात अरियाका (काठियावाड़) में अबीसीनियाई पूर्वी (अफ्रीका) बंदरगाहों को किया जाता था। पश्चिम एशिया में इन वस्तुओं की भारी मांग थी। यह जानकारी पेरिप्लस से मिलती है।

यद्यपि साहित्यिक स्त्रोतों में शिल्पियों की चर्चा नागरीय संदर्भ में हुई है तथापि इस काल में शिल्पी गाँव में भी पाते थे। तेलांगना स्थित करीमनगर के एक गाँव में बढ़ई, लोहार, सुनार, कुम्हार आदि अलग-

Scanned with CamScanner

अलग टोली में रहते थे तथा कृषि मजदूर तथा अन्य मजदूर एक दूसरे छोर पर बसते थे।

इस काल का मुख्य व्यवसाय कपड़े की बुनाई, रेशम बुनने और अस्त्रों का निर्माण तथा विलास की वस्तुओं का निर्माण था।

पातंजलि के अनुसार मथुरा शाटक नाम के एक विशेष सूती वस्त्र का बड़ा केन्द्र था।

दक्षिण भारत के कई नगरों में रंगरेजी के उन्नत शिल्प थे जैसे तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नगर के उरैयूर तथा अरिकमेडु में ईसा की पहली तथा तीसरी सदी के रंगाई के हौज प्राप्त हुए हैं।

मगध में लोहा बहुत अधिक मात्रा में होता था और वहाँ से बाहर भेजा जाता था। ताँबे की खान राजस्थान से मिली है। हिमालय की ढलान में कस्तुरी तथा केसर का उत्पादन होता था।

Scanned with CamScanner

पंजाब की नमक की पहाड़ी 'नमक' का प्रमुख स्त्रोत थी दक्षिण भारत में मसाला, सोना, रत्न तथा चंदन की लकड़ी मिलती थी।

कश्मीर, कोसल, विदर्भ तथा कलिंग हीरे के लिये विख्यात थे। मगध वृक्षों के रेशे से बने मलमल के लिये प्रसिद्ध था तथा बंगाल का मलमल रोम की महिलाओं के मध्य अत्यंत लोकप्रिय था। वंग तथा पुंड्र के मलमल को गंगई कहा जाता था।

मिलिन्दपन्हो के अनुसार बुद्ध की मौसी गौतमी ने वस्त्र निर्माण के पाँच प्रकार बताए हैं।

महाभारत, मिलिन्दपन्हो तथा दिव्यावदान के अनुसार गंगा वेसिन, वाराणसी, कोयम्बटूर और अपरांत (महाराष्ट्र) में विभिन्न प्रकार के सूती वस्त्र निर्मित किये जाते थे। मसूलिया तथा उरैयुर (अरकाट) भी मलमल के लिये प्रसिद्ध थे।

Scanned with CamScanner

प्लिनी के अनुसार भारत में पीतल तथा सीसा का उत्पादन नहीं होता था।

भारत में सोने का उत्पादन कम था। महाभारत से ज्ञात होता है कि सोना पूरब से यानि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में आता था।

छोटा नागपुर तथा असम क्षेत्र में नदी के रेत से भी सोना प्राप्त किया जाता था।

पेरिप्लस के अनुसार सुवर्ण (बुलियन) फारस की खाड़ी से पूर्वी अरब क्षेत्र का होकर पश्चिमी भारत में आता था।

मोती : पेरिप्लस के अनुसार मोती कोल्ची (कोरकई) से प्राप्त होता था, तथा इसे नीचले गंगा क्षेत्र से भी निकला जाता है।

टॉलमी के अनुसार यह सुदूर दक्षिण से प्राप्त होता था।

प्लिनी के अनुसार मोती पेरीमोला (आधुनिक) चौल बंदर बाह से प्राप्त होता था।

प्लिनी ने भारत को रत्नों की एकमात्र जननी कहा है साथ ही भारत को सबसे महंगी वस्तुओं की जन्मदात्री कहा है।

Scanned with CamScanner

टॉलेमी के अनुसार हीरे, कोसा (वैराग) सबराई (संबल पुर तथा एडम नदी के मुहाने से प्राप्त किये जाते थे। पेरिप्लस के अनुसार गोमेद और कार्नेलियन दक्कन के पहाड़ों में पाया जाता था। इसके अनुसार दोशाह्न (दशारन) पूर्वी मालवा में एक प्रकार के हाथी दाँत का उत्पादन होता है। मध्य प्रदेश में उज्जैन बनाने का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था।

अर्थशास्त्र में मदिरा के उत्पादन पर विशेष बल दिया गया है। इसकी लोकप्रियता की पहचान इस काल की मूर्तिकला में विशेषकर संघोल एवं मथुरा में चित्रित मद्यपान से की जाती है।

भारतीय दन्तशिल्प की वस्तुये अफगानिस्तान और रोम से भी मिली है। इनका संबंध दक्कन में सातवाहन स्थलों के उत्खनन में पाई गई दन्त शिल्प की वस्तुओं से जोड़ा जाता है।